

* سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلَّيْتَهُمْ عَنِ قِبَلَتِهِمْ الَّتِي
 كَانُوا عَلَيْهَا قُلْ لِلَّهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى
 صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿١٤٢﴾ وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا لِتَكُونُوا
 شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا وَمَا
 جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِي كُنْتَ عَلَيْهَا إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَتَّبِعِ
 الرَّسُولَ مِمَّنْ يَنْقَلِبُ عَلَى عَقْبَيْهِ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيرَةً إِلَّا
 عَلَى الَّذِينَ هَدَى اللَّهُ وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِيعَ إِيمَانَكُمْ إِنَّ
 اللَّهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٣﴾ قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي
 السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ
 الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوا وُجُوهَكُمْ شَطْرَهُ
 وَإِنَّ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ لَيَعْلَمُونَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَبِّهِمْ وَمَا
 اللَّهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُونَ ﴿١٤٤﴾ وَلَيْنَ آتَيْتَ الَّذِينَ أُوتُوا
 الْكِتَابَ بِكُلِّ آيَةٍ مَا تَبِعُوا قِبْلَتَكَ وَمَا أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبَلَتِهِمْ
 وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ وَلَيْنَ آتَبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ مِنْ
 بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ إِنَّكَ إِذَا لَمِنَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٥﴾ الَّذِينَ
 آتَيْنَاهُمُ الْكِتَابَ يَعْرِفُونَهُ كَمَا يَعْرِفُونَ أَبْنَاءَهُمْ وَإِنَّ
 فَرِيقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُونَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤٦﴾ الْحَقُّ مِنْ
 رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِينَ ﴿١٤٧﴾

Theme

<p>Qiblah (direction in prayers). The order of Allah to change Qiblah. The Ka'ba in Makkah was made the new Qiblah.</p>	<p>क़िब्ला (नमाज़ की सिम्त) ।अल्लाह तआला के हुक्म से क़िब्ला तब्दील किया गया। मक्का मुकर्रमा में वाक़े काबा को नया क़िब्ला मुकर्रर किया गया।</p>
---	--

Tarjumani

<p>The foolish will ask: "Why did they turn away from the Qiblah (the direction in prayer) towards which they used to face?" O Muhammad, say: "East and West belong to Allah; He guides whomever He wishes to the Right Way" We have made you a moderate Ummah (nation) so that you may testify against mankind and that your own Rasool may testify against you. We decreed your former Qiblah only to distinguish those who are the real followers of the Rasool from those who would turn away from the faith. It was indeed a hard test except for those whom Allah has guided. Allah does not want to make your faith fruitless. Allah is Compassionate and Merciful to</p>	<p>नादान लोग ज़रूर कहेंगे, "इन्हें क्या हुआ कि पहले ये जिस क़िब्ले की तरफ़ रुख करके नमाज़ पढ़ते थे, उससे यकायक फिर गए?" ऐ नबी, इनसे कहो, "मशरिक और मगरिब सब अल्लाह के हैं अल्लाह जिसे चाहता है, सीधी राह दिखा देता है " और इसी तरह तो हमने तुम मसलमानों को एक "उम्मते-वस्त" बनाया है ताकि तुम दुनिया के लोगों पर गवाह हो और रसूल तुमपर गवाह हो पहले जिस तरफ़ तुम रुख करते थे, उसको तो हमने सिर्फ़ यह देखने के लिए क़िब्ला मुकर्रर किया था कि कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटा फिर जाता है यह मामला था तो बड़ा सख्त, मगर उन लोगों के लिए कुछ भी सख्त न साबित हुआ जो अल्लाह की हिदायत से फ़ैज़याब थे अल्लाह तुम्हारे इस ईमान को हरगिज़ जाया न करेगा, यकीन जानो कि वह लोगों के हक़ में</p>
--	---

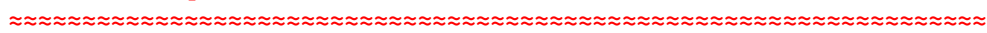
<p>mankind. O Muhammad, many a time, we have noticed you turning your face towards heaven; now, we shall make you turn towards a Qiblah that will please you. Turn your face (during Salah) towards the Al-Masjid Al-Haram (Kabah); wherever you are, turn your face in that direction. Surely, those were given the Book know that it is the truth from their Rabb. Allah is not unaware of what they do. Even if you give every proof to the people of the Book, they will not accept your Qiblah, nor will you accept theirs. Neither of them (the Jews and Christians) are the followers of each other's Qiblah. If, after all the knowledge you have been given, you yield to their desires then surely, you will be among the wrongdoers. Those, to whom We have given the Book (Jews and Christians) recognize this fact as they recognize their own sons. Nevertheless, a group of them deliberately conceal the truth.</p>	<p>निहायत शफीक व रहीम है ऐ नबी, यह तुम्हारे मुहँ का बार-बार आसमान की तरफ़ उठाना हम देख रहे हैं लो, हम उसी किल्ले की तरफ़ तुम्हें फेरे देते हैं जिसे तुम पसन्द करते हो मस्जिदे-हराम की तरफ़ रुख फेर दो अब जहाँ कहीं तुम हो, उसी की तरफ़ मुहँ करके नमाज़ पढ़ा करो ये लोग जिन्हें किताब दी गई थी, ख़ूब जानते हैं कि (तहवीले-किल्ला का) यह हुक्म उनके रब ही की तरफ़ से है और बरहक है, मगर इसके बावजूद जो कुछ ये कर रहे हैं, अल्लाह उससे गाफ़िल नहीं है तुम इन अहले-किताब के पास खाह कोई निशानी ले आओ, मुमकिन नहीं कि ये तुम्हारे किल्ले की पैरवी करने लगें, और न तुम्हारे लिए यह मुमकिन है कि उनके किल्ले की पैरवी करो, और उनमें से कोई गरोह भी दूसरे के किल्ले की पैरवी के लिए तैयार नहीं है, और अगर तुमने उस इल्म के बाद, जो तुम्हारे पास आ चुका है, उनकी खाहिशात की पैरवी की तो यकीनन तुम्हारा शुमार ज़ालिमों में होगा जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे इस मक़ाम को (जिसे किल्ला बनाया गया है) ऐसा पहचानते हैं, जैसा अपनी औलाद को पहचानते हैं,</p>
---	--

<p>The truth is from your Rabb; therefore, you should never be among those who doubt.</p>	<p>मगर इनमें से एक गिरोह जानते-बुझते हक़ को छिपा रहा है यह कतई एक अग्रे-हक़ है तुम्हारे रब की तरफ़ से, लिहाज़ा इसके मुताल्लिक तुम हरगिज़ किसी शक में न पड़ो </p>
<p>Tafsir</p>	
<p>The fools among the people will ask, ‘What has made them turn round from the direction they used to face?’ Say, ‘Both East and West belong to Allah. He guides whoever He wills to a straight path.’ [2:142]</p>	<p>लोगों में से नासमझ कहेंगे: “किस चीज़ ने उन्हें उस क़िब्ले से फेर दिया जिसकी तरफ़ वे पहले रुख़ करते थे?” कह दीजिए: “मशरिक् और मगरिब सब अल्लाह ही के हैं। वह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत देता है।” [2:142]</p>
<p>The fools among the people will ask,</p>	<p>लोगों में से नासमझ लोग पूछेंगे,</p>
<p>Allah Almighty is giving advance warning of what some people are going to say about the believers changing the direction they face in prayer from Syria to the Ka‘bah. The word ‘fools’ is qualified by ‘people’ because foolishness is also found in animals. The fools are those who say this. A fool (<i>safih</i>) is someone with a poor intellect. A garment</p>	<p>अल्लाह तआला पहले ही यह ख़बर दे रहे हैं कि कुछ लोग मोमिनों के नमाज़ में रुख़ बदलने—यानी शाम (बैतुल-मक़दिस) से काबा की तरफ़ मुँह करने—के बारे में क्या कहेंगे। यहाँ लफ़ज़ “बे-वकूफ़” के साथ “लोगों में से” इसलिए कहा गया है कि बेवकूफी जानवरों में भी पाई जाती है। असल बेवकूफ़ वही हैं जो ऐसी बातें कहते हैं। बेवकूफ़ (सफ़ीह) वह शख्स होता है जिसकी अक़ल कमज़ोर हो। लफ़ज़</p>

<p>which is <i>safih</i>, the root from which the word comes, is loosely woven. Qutrub says that they are ignorant wrongdoers. This refers to the Jews in Madīnah, as Mujāhid says. As-Suddī said that it refers to the hypocrites and az-Zajjāj says that it means the unbelievers of Quraysh when they objected to the change of <i>qiblah</i>. They said, ‘Muhammad yearns for his homeland and will soon revert to your religion.’ The Jews said, ‘He is confused about the business.’ The hypocrites said, ‘What has made them turn around from their <i>qiblah</i>?’ to mock the Muslims.</p>	<p>सफ़ीह जिस माद्दे से निकला है, उसका इतलाक़ ऐसे कपड़े पर भी होता है जो ढीला बुना हुआ हो। कुतरुब के नज़दीक इससे मुराद जाहिल और ज़ालिम लोग हैं। मुजाहिद के मुताबिक़ इससे मुराद मदीना के यहूदी हैं। सुद्दी कहते हैं कि इससे मुराद मुनाफ़िक़ हैं, जबकि ज़ज्जाज के नज़दीक इसका मतलब कुरैश के काफ़िर हैं जिन्होंने क़िब्ला की तब्दीली पर एतराज़ किया। उन्होंने कहा: “मुहम्मद को अपने वतन की याद आ गई है और वह जल्द ही तुम्हारे दीन की तरफ़ लौट आँगे।” यहूदियों ने कहा: “वह इस मामले में उलझन का शिकार हो गया है।” और मुनाफ़िक़ों ने मुसलमानों का मज़ाक़ उड़ाने के लिए कहा: “किस चीज़ ने उन्हें उनके क़िब्ले से फेर दिया?”</p>
<p>‘What has made them turn round from the direction they used to face?’</p>	<p>“किस चीज़ ने उन्हें उस سمت से फेर दिया जिसकी तरफ़ वे पहले रुख़ करते थे?”</p>
<p>The imams report that Ibn ‘Umar said, ‘While people were at Quba’ performing the Ṣubḥ prayer, someone came to them and said, “The Messenger</p>	<p>इमामों ने रिवायत की है कि इब्र-ए-उमरु ने फ़रमाया: “जब लोग कुबा में नमाज़-ए-फ़ज़्र अदा कर रहे थे तो एक शख़्स उनके पास आया और कहा: ‘रसूल-ए-अल्लाह ﷺ पर रात के</p>

of Allah ﷺ received Revelation in the night and he has been commanded to face the Ka'bah." They were facing Syria and immediately turned right round to face the Ka'bah.' Al-Bukhārī transmitted from al-Barā' that the Prophet ﷺ was praying towards Jerusalem for sixteen or seventeen months. He wanted his qiblah to be towards the Ka'bah. The first prayer he prayed towards it was 'Aṣr and people prayed it with him. A man who had prayed with the Prophet ﷺ left and passed by the people of another mosque who were in rukū'. He said, 'I testify by Allah that I prayed with the Prophet ﷺ towards Makkah.' So they turned round so that they were facing the House. There were men who had died while they were facing the old qiblah before the change to the House and they did not know what to say about them. So Allah Almighty revealed: 'Allah would never let your

वक्त वही नाज़िल हुई है और आपको काबा की तरफ़ रुख करने का हुक्म दिया गया है।' वे शाम (बैतुल-मक़दिस) की तरफ़ रुख किए हुए थे, चुनाँचे फ़ौरन घूम कर काबा की तरफ़ मुतवज्जेह हो गए।" बुखारी ने बराअ से रिवायत किया है कि नबी ﷺ सोलह या सत्रह महीने बैतुल-मक़दिस की तरफ़ रुख करके नमाज़ पढ़ते रहे। आपकी ख़्वाहिश थी कि क़िब्ला काबा की तरफ़ हो। पहली नमाज़ जो आपने उसकी तरफ़ रुख करके अदा की वह नमाज़-ए-अस्र थी, और लोगों ने आपके साथ वह नमाज़ पढ़ी। एक शख्स जिसने नबी ﷺ के साथ नमाज़ पढ़ी थी वहाँ से निकला और एक दूसरी मस्जिद के लोगों के पास पहुँचा जो रूकू' में थे। उसने कहा: "मैं अल्लाह की क़सम खा कर गवाही देता हूँ कि मैंने नबी ﷺ के साथ मक्का की तरफ़ रुख करके नमाज़ पढ़ी है।" चुनाँचे वे लोग घूम गए यहाँ तक कि बैतुल्लाह की तरफ़ रुख हो गया। कुछ ऐसे लोग भी थे जो क़िब्ला की तब्दीली से पहले पुराने क़िब्ले की तरफ़ रुख किए हुए वफ़ात पा गए थे, तो लोगों को उनके बारे में क्या कहना चाहिए यह मालूम न था। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल



<p>faith go to waste.’</p>	<p>फ़रमाई: “अल्लाह तुम्हारे ईमान को हरगिज़ ज़ाए नहीं करेगा।”</p>
<p>This transmission mentions the ‘Aṣr prayer whereas the transmission of Mālik mentioned the Ṣubḥ prayer. It is also said that it was revealed while the Prophet ﷺ was in the mosque of the Banū Salamah performing Zuhr and he changed qiblah after two rak‘ahs of it. For that reason, it was called the Mosque of the Two Qiblahs.</p>	<p>इस रिवायत में नमाज़-ए-अस्र का ज़िक्र है, जबकि इमाम मालिक की रिवायत में नमाज़-ए-फ़ज्र (सुबह) का ज़िक्र आया है। यह भी कहा गया है कि यह हुक्म उस वक़्त नाज़िल हुआ जब नबी ﷺ बनू सलमा की मस्जिद में नमाज़-ए-जुहर अदा कर रहे थे, और आपने उसकी दो रकअत के बाद क़िब्ला बदल लिया। इसी वजह से उस मस्जिद को मस्जिद-ए-क़िब्लतैन (दो क़िब्लों वाली मस्जिद) कहा जाता है।</p>
<p>In at-Tamhīd, Abū ‘Umar mentioned from Nuwaylah bint Aslam, one of the women who gave allegiance: ‘We were performing the Zuhr prayer when ‘Abbād ibn Bishr ibn Qayzi came and said, “The Messenger of Allah ﷺ has faced the qiblah (or ‘the Sacred House’), so the men moved to where the women were and the women moved to where the men were.’” It is also said that the āyah was revealed about other than the prayer, and that</p>	<p>किताब अत-तम्हीद में अबू उमर ने नुवैलह बिन्त असलम—जो बैअत करने वाली औरतों में से थीं—से रिवायत नक़ल की है। वह कहती हैं: “हम नमाज़-ए-जुहर अदा कर रही थीं कि अब्बाद बिन बिश्र बिन क़ैज़ी आए और कहा: ‘रसूल-ए-अल्लाह ﷺ ने क़िब्ला (या ‘बैतुल-हराम’) की तरफ़ रुख़ फ़रमा लिया है।’ चुनाँचे मर्द उस जगह चले गए जहाँ औरतें थीं और औरतें उस जगह चली गईं जहाँ मर्द थे।” यह भी कहा गया है कि यह आयत नमाज़ के अलावा किसी और मामले के बारे में नाज़िल हुई,</p>



<p>is more common. ‘Aṣr was the first prayer towards the qiblah. Allah knows best.</p>	<p>और यही क़ौल ज़्यादा मशहूर है। नमाज़-ए-अस्र पहली नमाज़ थी जो क़िब्ले की तरफ़ अदा की गई। और अल्लाह ही बेहतर जानता है।</p>
<p>It is related that the first to pray towards the Ka‘bah, when the qiblah was changed from Jerusalem, was Abū Sa‘īd ibn al-Mu‘allā. That was when he was passing through the mosque and heard the Messenger of Allah ﷺ telling people to change the qiblah, reciting this āyah while he was on the minbar: ‘We have seen you looking up into heaven...’ He told his companion, ‘Come and let us pray two rak‘ahs before the Messenger of Allah ﷺ comes down! Then we will be the first to pray and we will be covered in blessings.’ They prayed them and then the Messenger of Allah ﷺ descended and led the people in Zuhr.</p>	<p>रिवायत किया गया है कि जब क़िब्ला बैतुल-मक़दिस से काबा की तरफ़ बदला गया तो सबसे पहले काबा की तरफ़ नमाज़ पढ़ने वाले अबू सईद बिन अल-मुअल्ला थे। यह उस वक़्त हुआ जब वे मस्जिद के पास से गुज़र रहे थे और उन्होंने रसूल-ए-अल्लाह ﷺ को मिम्बर पर यह आयत तिलावत करते हुए लोगों को क़िब्ला बदलने का हुक्म देते सुना: “हमने तुम्हें आसमान की तरफ़ बार-बार निगाह उठाते देखा है ...” उन्होंने अपने साथी से कहा: “आओ, इससे पहले कि रसूल-ए-अल्लाह ﷺ मिम्बर से उतरें, हम दो रकअत नमाज़ पढ़ लें, ताकि हम सबसे पहले नमाज़ पढ़ने वाले हों और बरकतों से ढाँप दिए जाएँ।” चुनाँचे उन्होंने दो रकअत अदा कीं, फिर रसूल-ए-अल्लाह ﷺ मिम्बर से उतरे और लोगों को नमाज़-ए-जुहर पढ़ाई।</p>
<p>There is disagreement about the length of time the Prophet ﷺ was in Madīnah before the</p>	<p>इस बात में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है कि क़िब्ले की तब्दीली से पहले नबी ﷺ मदीना में कितने अरसे रहे। कहा</p>

qiblah was changed. It is said that it was changed after sixteen or seventeen months, as we find in al-Bukhārī. Ad-Dāraqutnī also reported that al-Barā' said, 'We prayed with the Messenger of Allah ﷺ after he came to Madīnah towards Jerusalem for sixteen months. Then Allah informed the Prophet that He was aware of his desire to change qiblah and the Revelation came: "We have seen you looking into heaven, turning this way and that." It was sixteen months without doubt.' Mālik related from Yaḥyā ibn Sa'īd that Sa'īd ibn al-Musayyab said that the qiblah was changed two months before Badr. Ibrāhīm ibn Ishāq said that was in Rajab, 2 AH. Al-Bustī said, 'The Muslims prayed towards Jerusalem for seventeen months and three days. He came to Madīnah on Monday, 15 Rabī' al-Awwal, and Allah commanded him to face the Ka'bah on Tuesday, 15

जाता है कि सोलह या सत्रह महीनों के बाद क़िब्ला बदला गया, जैसा कि बुखारी में मज़कूर है। दारकुतनी ने भी बराअ' से रिवायत नक़ल की है कि उन्होंने कहा: "हमने रसूल-ए-अल्लाह ﷺ के साथ मदीना तशरीफ़ लाने के बाद सोलह महीने बैतुल-मक़दिस की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ी। फिर अल्लाह तआला ने नबी ﷺ को आगाह फ़रमाया कि वह आपकी क़िब्ला बदलने की ख़्वाहिश से वाक़िफ़ है, चुनाँचे वही नाज़िल हुई: 'हमने तुम्हें आसमान की तरफ़ बार-बार देखते हुए देखा है...' बिला शुब्ह यह मुद्दत सोलह महीने थी।" इमाम मालिक ने यह्या बिन सईद से रिवायत किया है कि सईद बिन अल-मुसय्यब ने कहा: क़िब्ले की तब्दीली ग़ज़वा-ए-बद्र से दो महीने क़ब्ल हुई। इब्राहीम बिन इसहाक़ कहते हैं कि यह वाक़िआ 2 हिजरी के माह-ए-रजब में पेश आया। अल-बुस्ती कहते हैं: "मुसलमानों ने सत्रह महीने और तीन दिन बैतुल-मक़दिस की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ी। नबी ﷺ पीर के दिन 15 रबीउल-अव्वल को मदीना तशरीफ़ लाए, और उसके अगले साल मंगल के दिन 15 शाबान को अल्लाह तआला ने आपको काबा की तरफ़ रुख़ करने

Sha‘bān the following year.’	का हुक्म दिया।”
<p>Scholars are of three different opinions concerning the reason why the Prophet ﷺ faced Jerusalem. Al-Ḥasan said, ‘It was by opinion and ijtihād.’ ‘Ikrimah and Abī al-‘Āliyah agreed with that view. The second opinion is that he had a choice between it and the Ka‘bah and chose Jerusalem because he wanted the Jews to believe. Aṭ-Ṭabarī said that. Az-Zajjāj said that it was to test the idolaters because they were used to the Ka‘bah. The third opinion and the one which the majority hold – Ibn ‘Abbās and others – is that he was obliged to face it by the command of Allah and Revelation from Him. Then Allah abrogated that and commanded him to face the Ka‘bah in the prayer. They cite as evidence: ‘We only appointed the direction you used to face in order to distinguish those who follow the Messenger’ from those who turn round on their heels.’</p>	<p>उलमा के दरमियान इस बात में तीन मुख्तलिफ़ आराएँ पाई जाती हैं कि नबी ﷺ ने इब्तिदा में बैतुल-मक़दिस की तरफ़ रुख़ क्यों फ़रमाया। हसन बसरी ने कहा: “यह राय और इज्तिहाद की बुनियाद पर था।” इक्रिमा और अबू अल-आलिया भी इसी राय के क़ायल हैं। दूसरी राय यह है कि नबी ﷺ को बैतुल-मक़दिस और काबा—दोनों में से किसी एक की तरफ़ रुख़ करने का इख़्तियार दिया गया था, और आपने बैतुल-मक़दिस को इसलिए इख़्तियार फ़रमाया कि आप यहूदियों के ईमान लाने की उम्मीद रखते थे। यह राय इमाम तबरी ने बयान की है। ज़ज्जाज ने कहा कि इसका मक़सद मुशरिकीन का इम्तिहान लेना था, क्योंकि वे काबा के आदी थे। तीसरी राय—और यही जम्हूर की राय है, जिसके क़ायल इब्र अब्बास और दीगर हैं—यह है कि नबी ﷺ को अल्लाह तआला के हुक्म और उसकी वही के ज़रिये बैतुल-मक़दिस की तरफ़ रुख़ करने का पाबंद किया गया था। फिर बाद में अल्लाह तआला ने इस हुक्म को मन्सूख़ करके नमाज़ में काबा की</p>

<p>(2:143)</p>	<p>तरफ़ रुख़ करने का हुक्म दिया। वे इसके सबूत में यह आयत पेश करते हैं: “और हमने वह क़िब्ला जिसकी तरफ़ तुम रुख़ करते थे सिर्फ़ इसलिए मुकर्रर किया था ताकि हम जान लें कौन रसूल की पैरवी करता है” और कौन उलटा फिर जाता है। (2:143)</p>
<p>There is also disagreement about when the prayer was first made obligatory for him at Makkah and whether the qiblah was then towards Jerusalem or the Ka'bah. There are two positions. One group say that it was towards Jerusalem and remained that way in Madīnah for seventeen months and then Allah changed it to the Ka'bah. Ibn 'Abbās said that. Others say that when the prayer was first made obligatory for him he faced towards the Ka'bah and he continued to pray towards it while he was in Makkah, as Ibrāhīm and Ismā'īl had done. When he went to Madīnah he prayed towards Jerusalem for sixteen or seventeen months and then Allah changed the qiblah back</p>	<p>इस बात में भी इख़्तिलाफ़ पाया जाता है कि मक्का में नबी ﷺ पर नमाज़ कब फ़र्ज़ की गई, और उस वक़्त क़िब्ला बैतुल-मक़दिस था या काबा। इस बारे में दो आराएँ हैं। एक गिरोह का कहना है कि इब्तिदा में क़िब्ला बैतुल-मक़दिस था, और मदीना में भी सत्रह महीने तक वही रहा, फिर अल्लाह तआला ने उसे काबा की तरफ़ बदल दिया। यह क़ौल इब्न अब्बास से मन्कूल है। दूसरे उलमा कहते हैं कि जब सबसे पहले नबी ﷺ पर नमाज़ फ़र्ज़ की गई तो आप काबा की तरफ़ रुख़ करते थे, और मक्का में क़ियाम के दौरान उसी की तरफ़ नमाज़ पढ़ते रहे, जैसा कि इब्राहीम और इस्माईल किया करते थे। फिर जब आप मदीना तशरीफ़ लाए तो सोलह या सत्रह महीने बैतुल-मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ी, उसके बाद अल्लाह तआला ने क़िब्ला दोबारा</p>

to the Ka'bah. Abū 'Umar said, 'I consider this to be the sounder of the two positions.' Another said, 'That was because when the Prophet ﷺ came to Madīnah, he wanted to court the Jews and turned to their qiblah so that the Message would be easier for them to accept. When their obstinacy was evident and he despaired of them, he wanted to change back to the Ka'bah and he looked up at the heavens.' His love for Makkah was because it was the qiblah of Ibrāhīm, as Ibn 'Abbās said. It is said that it was to call the Arabs to Islam. It is said that it was to be different from the Jews, as Mujāhid said. Abū-l-'Āliyah ar-Riyyāhī said, 'The mosque and qiblah of Ṣāliḥ was towards the Ka'bah. Mūsā used to pray towards the Stone which was in the direction of the Ka'bah and it was the qiblah of all the Prophets.'

काबा की तरफ़ बदल दिया। अबू उमर कहते हैं: “मेरे नज़दीक इन दोनों में से यही मौक़िफ़ ज़्यादा दुरुस्त है।” एक और क़ौल यह है कि जब नबी ﷺ मदीना आए तो आपने यहूदियों की दिल-जुई और उनके क़रीब आने के लिए उनके क़िब्ले की तरफ़ रुख़ किया, ताकि उनके लिए पैग़ाम क़बूल करना आसान हो जाए। लेकिन जब उनकी हट-धर्मी ज़ाहिर हो गई और आपको उनसे कोई उम्मीद न रही तो आपने दोबारा काबा की तरफ़ रुख़ करने की ख़्वाहिश की और आसमान की तरफ़ निगाह उठाने लगे। मक्का से आपकी मोहब्बत इसलिए थी कि वह इब्राहीम का क़िब्ला था, जैसा कि इब्र अब्बास ने बयान किया। यह भी कहा गया है कि इस तब्दीली का मक़सद अरबों को इस्लाम की तरफ़ बुलाना था। और यह भी कहा गया है कि यहूदियों से इम्तियाज़ क़ायम करना मक़सूद था, जैसा कि मुजाहिद ने कहा। अबू अल-आलिया अर-रियाही ने कहा: “सालिह की मस्जिद और क़िब्ला काबा की तरफ़ था। मूसा उस पत्थर की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते थे जो काबा की سمت में था, और वही

	<p>तमाम अबिया का क्बला था।”</p>
<p>This āyah contains clear evidence that the rulings of Allah and His Book can be both abrogating and abrogated and the Community agree on that, except for the rare exception. Scholars agree that the qiblah was the first ruling to be abrogated in the Book and that it was abrogated twice, according to one of the positions about the matter. It also indicates that it is permissible for the Sunnah to be abrogated by the Qur’an. That is because the Prophet ﷺ prayed towards Jerusalem and there was no Qur’anic text on that. That was a judgment only from the Sunnah and then that was abrogated by the Qur’an.</p>	<p>इस आयत में इस बात की वाज़ेह दलील मौजूद है कि अल्लाह तआला के अहकाम और उसकी किताब में नासिख भी होते हैं और मन्सूख भी, और इस पर पूरी उम्मत का इत्तिफ़ाक़ है, सिवाए चंद नादिर अफ़राद के। उलमा इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि कुरआन में सबसे पहला हुक्म जो मन्सूख हुआ वह क्बले का हुक्म था, और एक क़ौल के मुताबिक़ वह दो मरतबा मन्सूख हुआ। यह आयत इस अम्र की भी दलील है कि सुन्नत को कुरआन के ज़रिये मन्सूख किया जाना जायज़ है। इसकी वजह यह है कि नबी ﷺ ने बैतुल-मक़दिस की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ अदा की, जबकि इस बारे में कोई कुरआनी नस्स मौजूद न थी। यह हुक्म सिर्फ़ सुन्नत से साबित था, फिर बाद में कुरआन के ज़रिये इसे मन्सूख कर दिया गया।</p>
<p>The āyah also contains evidence of the permission to make a ruling based on a single ḥadīth. That was because facing Jerusalem was definite in our Sharī’ah, and then when</p>	<p>इस आयत में इस बात की भी दलील मौजूद है कि एक ही हदीस की बुनियाद पर हुक्म क़ायम करना जायज़ है। इसकी वजह यह है कि हमारी शरीअत में बैतुल-मक़दिस की तरफ़ रुख़ करना क़तई तौर पर</p>

someone came to the people of Qubā' and told them that the qiblah had been changed to the Sacred Mosque, they accepted that and turned towards it and abandoned the mutawātir in favour of the single report they heard. Scholars disagree about whether it is permitted logically and actually. Abū Hātim said, 'What is preferred is that that is permitted logically, if it is part of the worship entailed by the Sharī'ah, and actually in the time of the Prophet ﷺ as is shown in the story of Qubā' and also by the evidence that the Prophet ﷺ sent individual governors to the regions and they conveyed both the abrogating and abrogated. However it became forbidden after the death of the Prophet ﷺ by the consensus of the Companions, and the position then was that the Qur'an and the mutawātir are well-known and may not be abrogated by a single ḥadīth, and no one believes that to be possible.

साबित था, फिर जब एक शख्स कुबा के लोगों के पास आया और उन्हें खबर दी कि क़िब्ला बैतुल्लाह (मस्जिद-ए-हराम) की तरफ़ बदल दिया गया है तो उन्होंने उस बात को क़बूल कर लिया, काबा की तरफ़ रुख़ कर लिया, और इस वाहिद खबर की बुनियाद पर पहले से मअरूफ़ और मुतवातिर अमल को छोड़ दिया। उलमा के दरमियान इस बात में इख़्तिलाफ़ है कि आया यह चीज़ अक़लन और अमलन जायज़ है या नहीं। अबू हातिम कहते हैं: "राजेह बात यह है कि यह अक़लन भी जायज़ है—अगर वह शरीअत के किसी अमली हुक्म से मुतअल्लिक़ हो—और अमलन भी नबी ﷺ के ज़माने में जायज़ थी, जैसा कि कुबा के वाक़िये से वाज़ेह है। इसी तरह इस बात से भी कि नबी ﷺ ने अलग-अलग इलाक़ों में वाहिद अफ़राद को हाकिम बना कर भेजा, और वे नासिख़ व मन्सूख़ दोनों अहक़ाम लोगों तक पहुँचाते थे। लेकिन नबी ﷺ की वफ़ात के बाद सहाबा के इज्मा से यह ममनूअ हो गया, और उस वक़्त यह उसूल क़ायम हुआ कि क़ुरआन और मुतवातिर दलाइल मअरूफ़ व क़तई हैं, और उन्हें एक वाहिद हदीस के ज़रिये

<p>Those who say that it is forbidden argue by the fact that it would lead to what is impossible, namely removing what is definitive in favour of what is supposition. The story of Qubā' and the governors is based on circumstances that convey knowledge either by transmission and realisation, or by probability and implication. This is a question about the fundamental principles of fiqh.</p>	<p>मन्सूख नहीं किया जा सकता—और कोई भी इसके इमकान का क़ायल नहीं। जो लोग इसके अदम-ए-जवाज़ के क़ायल हैं वे इस दलील से इस्तिदलाल करते हैं कि इससे एक नामुमकिन नतीजा लाज़िम आता है, यानी क़तई चीज़ को ज़त्री चीज़ की बुनियाद पर ख़त्म करना। कुबा के वाक़िये और आमिलों (गवर्नरों) के वाक़ियात ख़ास हालात पर मबनी थे, जो या तो नक़ल और तहक्कुक़ के ज़रिये इल्म का फ़ायदा देते थे, या क़राइन और इहतिमाल के ज़रिये। यह मसअला उसूल-ए-फ़िक्ह के बुनियादी बहसों में से है।</p>
<p>It also contains evidence that if the abrogation has not reached a person, then he should worship according to the first ruling. This differs from those who said that the first ruling is removed by the mere existence of the abrogation, not by knowledge of it. The first view is sounder because the people of Qubā' continued to pray towards Jerusalem until someone came and told them about the abrogation and then</p>	<p>इसमें इस बात की भी दलील मौजूद है कि अगर नसख़ (हुक्म के मन्सूख़ होने) की ख़बर किसी शख्स तक न पहुँची हो तो वह पहले हुक्म के मुताबिक़ ही इबादत करेगा। यह राय उन लोगों के क़ौल के ख़िलाफ़ है जो कहते हैं कि पहला हुक्म महज़ नसख़ के वाक़े हो जाने से ही ख़त्म हो जाता है, चाहे उसका इल्म हो या न हो। पहला क़ौल ज़्यादा दुरुस्त है, क्योंकि कुबा के लोग उस वक़्त तक बैतुल-मक़दिस की तरफ़ रुख़ करके नमाज़ पढ़ते रहे जब तक कोई आ कर उन्हें</p>

<p>they turned towards the qiblah. When the abrogation exists, it inevitably removes the prior judgment, but on the proviso that there is knowledge of it, because the abrogation is addressed to people, and if that has not reached someone, he is not addressed by it. The point in this disagreement concerns acts of worship which are performed after the abrogation but before the person performing them has heard about it: should he repeat them or not? This is also the basis for the actions of a deputy after he has been dismissed or the one who appointed him has died before he has learned of that. There are two views.</p>	<p>नस्ख की खबर न दे गया, फिर उन्होंने क़िब्ले की तरफ़ रुख़ कर लिया। नस्ख के वाक़े हो जाने से पहला हुक्म लाज़िमन ख़त्म हो जाता है, लेकिन इस शर्त के साथ कि उसका इल्म भी हासिल हो, क्योंकि नस्ख का ख़िताब लोगों से होता है, और जिस तक वह ख़िताब न पहुँचे वह उसका मुक़ल्लफ़ नहीं होता। इस इख़्तिलाफ़ का असल नुक्ता उन इबादात से मुतअल्लिक़ है जो नस्ख के बाद, लेकिन उसकी ख़बर मिलने से पहले अदा की जाएँ: क्या उन्हें दोबारा अदा करना लाज़िम है या नहीं? यही मसअला उस शख्स के आमाल की बुनियाद भी बनता है जो किसी का नायब हो और उसे मुअज़्ज़ल कर दिया गया हो, या जिसने उसे मुक़रर किया हो वह उसकी इतिला पहुँचने से पहले फ़ौत हो जाए। इस बारे में दो आराएँ पाई जाती हैं।</p>
<p>The same is true of a qirād transaction and those appointed by a judge when he dies or is dismissed. What is sound is that the action done by each of those people is carried out and their judgment is not revoked. Qādī 'Iyād said, 'There is no</p>	<p>यही हुक्म क़िराज़ (मुज़ारबत) के मामले और क़ाज़ी के मुक़रर किए गए कारिंदों के बारे में भी है, जब क़ाज़ी का इंतिक़ाल हो जाए या वह मुअज़्ज़ल कर दिया जाए। राजेह बात यह है कि इन सब के किए हुए आमाल नाफ़िज़ शुमार होंगे और</p>



<p>disagreement that the judgments of someone who has been freed, when he does not know that he has been freed, are the judgments of a free man in things involving other people. There is no disagreement that someone who has been freed does not repeat, after he was freed, any prayers he prayed with insufficient covering for a free person, when he did not know he had been freed. They disagree about someone who incurs an obligation which changes a ruling in worship while he is performing it which is analogous to the question of the prayer at Qubā'.</p>	<p>उनके फ़ैसले मन्सूख नहीं किए जाएँगे। क़ाज़ी इयाज़र कहते हैं: “इस बात में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि जिस शख्स को आज़ादी मिल चुकी हो और शख्स को आज़ादी मिल चुकी हो और उसे उसका इल्म न हो, तो उस हालत में उसके फ़ैसले—जहाँ दूसरे लोगों के हुक्म का ताल्लुक़ हो—आज़ाद आदमी ही के फ़ैसले शुमार होंगे। इसी तरह इस बात में भी कोई इख़्तिलाफ़ नहीं कि जो शख्स आज़ाद हो चुका हो, वह आज़ादी के बाद उन नमाज़ों को दोबारा अदा नहीं करेगा जो उसने आज़ादी से पहले उस हाल में पढ़ी हों कि आज़ाद शख्स के लिए लाज़िम पर्दा पूरा न था, बशर्ते कि उसे अपनी आज़ादी का इल्म न हो। अलबत्ता उलमा उस शख्स के बारे में इख़्तिलाफ़ करते हैं जो इबादत के दौरान ऐसा सबब लाहिक़ कर ले जिससे हुक्म बदल जाता हो—और यह मसअला कुबा की नमाज़ के मसले के मुशाबेह है।”</p>
<p>So if someone prays in a certain state which then changes before he finishes the prayer, he should complete the prayer and not break it off. What he has done satisfies the requirement. That is the same</p>	<p>पस अगर कोई शख्स किसी ख़ास हालत में नमाज़ शुरू करे और नमाज़ मुकम्मल होने से पहले उसकी वह हालत बदल जाए तो वह नमाज़ तोड़ेगा नहीं बल्कि उसे मुकम्मल करेगा, और जो कुछ उसने अदा कर</p>



<p>as someone who prays naked and then finds a garment while he is praying, or starts his prayer while healthy and then becomes ill, or is ill and then recovers, or sitting and then is able to stand, or the case of a slave-girl who is freed while she is praying: she takes a head covering and builds on what she has done. It is like someone who begins the prayer with tayammum and then finds water: he does not stop the prayer, as Mālik, ash-Shāfi‘ī and others said. Abū Hanīfah, however, said that he does stop it.</p>	<p>लिया वह काफ़ी शुमार होगा। यह उसी तरह है जैसे कोई शख्स नंगा हालत में नमाज़ पढ़ रहा हो और दौरान-ए-नमाज़ उसे कपड़ा मिल जाए, या सेहतमंद हालत में नमाज़ शुरू करे फिर बीमार हो जाए, या बीमार हो और फिर सेहतयाब हो जाए, या बैठ कर नमाज़ शुरू करे फिर खड़े होने की कुदरत हासिल हो जाए, या किसी लौंडी को नमाज़ के दौरान आज़ादी मिल जाए—तो वह सर का कपड़ा ओढ़ लेगी और जो नमाज़ पढ़ चुकी है उसी पर नमाज़ को जारी रखेगी। इसी तरह वह शख्स जो तयम्मूम के साथ नमाज़ शुरू करे और दौरान-ए-नमाज़ पानी मिल जाए: वह नमाज़ नहीं तोड़ेगा, जैसा कि इमाम मालिक़, इमाम शाफ़ेई और दीगर उलमा का क़ौल है। अलबत्ता इमाम अबू हनीफ़ा का कहना है कि वह नमाज़ तोड़ देगा।</p>
<p>This contains evidence that a single report is accepted. The Salaf agree on it and there are multiple transmissions about it going back to the Prophet ﷺ sending his governors and messengers singly to all regions to instruct people in</p>	<p>इसमें इस बात की भी दलील मौजूद है कि वाहिद ख़बर (एक ही रिवायत) को क़बूल किया जाता है। इस पर सलफ़ का इत्तिफ़ाक़ है, और इस बारे में मुतअद्दिद रिवायतें मन्कूल हैं जो इस अम्र तक पहुँचती हैं कि नबी ﷺ अपने गवर्नरों और क़ासिदों को</p>

<p>their dīn and convey to them the Sunnah of their Messenger ﷺ regarding commands and prohibitions. It also makes it very clear that the Qur'an was revealed to the Messenger of Allah ﷺ piece by piece and circumstance after circumstance, according to need, until the dīn was complete as Allah says: 'Today I have perfected your dīn for you.'</p>	<p>अलग-अलग तमाम इलाकों में अकेले भेजते थे, ताकि वे लोगों को उनके दीन की तालीम दें और रसूल-ए-अल्लाह ﷺ की सुन्नत—अवामिर और नवाहियों के बारे में—उन तक पहुँचाएँ। यह बात भी निहायत वाज़ेह हो जाती है कि कुरआन रसूल-ए-अल्लाह ﷺ पर ज़रूरत के मुताबिक़, थोड़ा-थोड़ा करके, एक हाल के बाद दूसरे हाल में नाज़िल होता रहा, यहाँ तक कि दीन मुकम्मल हो गया, जैसा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है: “आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन कामिल कर दिया है।”</p>
<p>Say: “Both East and West belong to Allah.</p>	<p>कह दीजिए: “मशरिक् और मगरिब सब अल्लाह ही के हैं।”</p>
<p>Since He owns them both, He is entitled to command any direction He wishes.</p>	<p>चूँकि वह दोनों का मालिक है, इसलिए उसे यह हक़ हासिल है कि जिस سمت का चाहे हुक्म दे।</p>
<p>He guides whoever He wills to a straight path.'</p>	<p>वह जिसे चाहता है सीधे रास्ते की हिदायत देता है।</p>
<p>This indicates Allah's guidance of this Community to the qiblah of Ibrāhīm and Allah knows best. Ṣirāṭ is the Path and 'straight' is that in which there are no twists.</p>	<p>इससे इस उम्मत को इब्राहीम के क़िब्ले की तरफ़ अल्लाह तआला की हिदायत का इशारा मिलता है, और अल्लाह ही बेहतर जानता है। सिरात रास्ते को कहते हैं, और सीधा उसको कहते हैं जिसमें कोई टेढ़ापन न हो।</p>

<p>In this way We have made you a middle-most community, so that you may act as witnesses against mankind and the Messenger as a witness against you. We only appointed the direction you used to face in order to know those who follow the Messenger from those who turn round on their heels. Though in truth it is a very hard thing – except for those Allah has guided. Allah would never let your faith go to waste. Allah is All-Gentle, Most Merciful to mankind. [2:143]</p>	<p>इस तरह हमने तुम्हें एक मुअतदिल उम्मत बनाया है, ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह हों। और जिस क़िब्ले की तरफ़ तुम पहले रुख करते थे, हमने उसे सिर्फ़ इस लिए मुक़र्रर किया था कि हम जान लें कौन रसूल की पैरवी करता है और कौन उलटे पाँव फिर जाता है। और यह बात यक़ीनन बहुत भारी थी, मगर उन लोगों पर नहीं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी। और अल्लाह तुम्हारे ईमान को हरगिज़ ज़ाया करने वाला नहीं। बेशक अल्लाह लोगों पर निहायत शफ़क़त करने वाला, बहुत मेहरबान है। [2:143]</p>
<p>In this way We have made you a middlemost community</p>	<p>इस तरह हमने तुम्हें एक मुअतदिल उम्मत बनाया है।</p>
<p>As the Ka'bah is in the middle of the earth, so We made you a middlemost nation, meaning that we made you inferior to the Prophets but superior to other communities. The word 'wasat' (middlemost) implies being just and balanced. The</p>	<p>जिस तरह काबा ज़मीन के बीचों-बीच वाक़े है, उसी तरह हमने तुम्हें एक दरमियानी (वसत) उम्मत बनाया, यानी हमने तुम्हें अंबिया से दर्जे में कम, मगर दूसरी उम्मतों से अफ़ज़ल बनाया। लफ़ज़ वसत (दरमियानी) का मफ़हूम अद्ल और तवाज़ुन है। इसकी बुनियाद यह क़ौल है कि “सब</p>

basis of this is the expression: 'The most praised of things is the middlemost of them.' At-Tirmidhī related from Abū Sa'īd al-Khudrī from the Prophet ﷺ about this āyah that it means 'just'. He said that it is a sound ḥasan ḥadīth. We find in the Revelation: 'The best (awsat) of them said.' It means the best and most just. The middle part of a valley is the best place in it and has the most plants and water. The middle avoids excess and falling short and is praiseworthy, so this community does not go to excess in elevating their Prophet (like the Christians) nor fall short as the Jews do in respect of their Prophets. In a ḥadīth we find, 'The best of matters is the middlemost of them.' 'Alī said, 'You must take the middle way. The high descend to it and the low rise to it.' Someone who is from the middlemost of his people is one of the best of them.

से ज़्यादा क़ाबिल-ए-तारीफ़ चीज़ वह होती है जो दरमियान में हो।" इमाम तिरमिज़ी ने हज़रत अबू सईद खुदरी से नबी ﷺ के हवाले से इस आयत के बारे में रिवायत किया है कि इसका मतलब "आदिल" है, और फ़रमाया कि यह हदीस हसन और सहीह है। हम वही में यह भी पाते हैं: "उन में से बेहतरीन (अवसत) ने कहा", यानी सब से बेहतर और सब से ज़्यादा आदिल। वादी का दरमियानी हिस्सा उसका सब से अच्छा मक़ाम होता है, जहाँ सब से ज़्यादा सब्ज़ा और पानी होता है। दरमियानी राह इफ़रात और तफ़रीत दोनों से बचाती है और क़ाबिल-ए-तारीफ़ होती है। इसी लिए यह उम्मत अपने नबी ﷺ के बारे में हद से नहीं बढ़ती जैसा कि ईसाइयों ने किया, और न ही कमी करती है जैसा कि यहूदियों ने अपने अंबिया के मामले में की। एक हदीस में आता है: "तमाम उमूर में बेहतरीन चीज़ उनका दरमियानी रास्ता है।" हज़रत अली ने फ़रमाया: "तुम्हें दरमियानी रास्ता इख़्तियार करना चाहिए, क्योंकि ऊँचे उसी की तरफ़ नीचे आते हैं और नीचे वाले उसी के ज़रिए ऊपर उठते हैं।" और जो शख्स अपनी क़ौम में

	दरमियानी (वसत) हो, वह उन में से बेहतरीन होता है।
so that you may act as witnesses against mankind	ताकि तुम लोगों के खिलाफ़ गवाह बनो।
This is referring to the Gathering, when the Prophets are joined with their nations, as is established in Ṣaḥīḥ Bukhārī when Abū Saʿīd al-Khudrī reported that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘Nūḥ will be summoned on the Day of Rising and he will say, “At your service and obedience, O Lord!” Allah will say, “Did you convey it?” He will say, “Yes.” It will be said to his community, “Did he convey it to you?” They will say, “No warner came to us.” Allah will ask Nūḥ, “Who will then testify on your behalf?” He will say, “Muḥammad and his community.” They will testify that he conveyed it. That is the meaning of His words: “In this way We have made you a middlemost community, so that you may act as witnesses against mankind.” Ibn al-	यह उस इज्तिमाअ (हश्र) की तरफ़ इशारा है, जब अंबिया को उनकी उम्मतों के साथ जमा किया जाएगा। जैसा कि सहीह बुखारी में साबित है कि हज़रत अबू सईद ख़ुदरी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “क्रियामत के दिन नूह को बुलाया जाएगा और वह कहेंगे: ‘हाज़िर हूँ, ऐ मेरे रब, और तेरे हुक्म की इताअत करता हूँ।’ अल्लाह फ़रमाएगा: ‘क्या तुमने पैग़ाम पहुँचा दिया था?’ वह अर्ज़ करेंगे: ‘जी हाँ।’ फिर उनकी क़ौम से पूछा जाएगा: ‘क्या इस ने तुम तक पैग़ाम पहुँचा दिया था?’ वह कहेंगे: ‘हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया।’ अल्लाह नूह से फ़रमाएगा: ‘तुम्हारी तरफ़ से कौन गवाही देगा?’ वह कहेंगे: ‘मुहम्मद ﷺ और उनकी उम्मत।’ पस वह गवाही देंगे कि उन्होंने पैग़ाम पहुँचा दिया था। यही अल्लाह तआला के इस फ़रमान का मफ़हूम है: ‘इस तरह हमने तुम्हें एक दरमियानी उम्मत बनाया ताकि तुम

Mubārak mentioned this ḥadīth in full. We find in it: ‘Those nations will ask, “How will those who did not meet us testify against us?” The Lord will ask them, “How can you testify against those whom you did not meet?” They will answer, “Our Lord, You sent a Messenger to us and sent down Your contract and Book to us and recounted to us that they conveyed it. Therefore we bear witness to what You entrusted to us.” The Lord will say, “You spoke the truth.” That is the import of His words: “We have made you a middlemost community,” and “middlemost” is “just”: “so that you may act as witnesses against mankind and the Messenger as a witness against you.” Ibn An‘am said, ‘I heard that on that Day the community of Muḥammad ﷺ will bear witness, except for someone who has sympathy in his heart for his brother.’

लोगों पर गवाह बनो।” इब्नुल-मुबारक ने इस हदीस को पूरी तफ़सील के साथ नक़ल किया है। इसमें यह भी आया है कि वह उम्मतें कहेंगी: “वह लोग जिन से तुम्हारी मुलाक़ात ही नहीं हुई, वह हमारे खिलाफ़ कैसे गवाही देंगे?” अल्लाह तआला उन से पूछेगा: “तुम उन के खिलाफ़ कैसे गवाही दे सकते हो जिन से तुम नहीं मिले?” वह अर्ज़ करेंगे: “ऐ हमारे रब! तू ने हमारी तरफ़ एक रसूल भेजा, हम पर अपना अहद और अपनी किताब नाज़िल की, और उसमें हमें बताया कि उन्होंने पैग़ाम पहुँचा दिया था, लिहाज़ा हम उस अमानत की गवाही देते हैं जो तू ने हमारे सुपुर्द की।” अल्लाह फ़रमाएगा: “तुम ने सच कहा।” यही उसके फ़रमान का हासिल है: “हमने तुम्हें एक दरमियानी उम्मत बनाया”, और “दरमियानी” का मतलब “आदिल” है: “ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह हों।” इब्न अअनाम ने कहा: “मैं ने सुना है कि उस दिन उम्मत-ए-मुहम्मद ﷺ गवाही देगी, सिवाए उस शख्स के जिस के दिल में अपने भाई के लिए

<p>One group said that the āyah means that they will testify against one another after death as is confirmed in Ṣaḥīḥ Muslim from Anas that the Prophet ﷺ said when a funeral passed by him and the deceased was spoken well of: ‘It is obliged. It is obliged. It is obliged.’ Then another passed him and the deceased was spoken ill of and he said, ‘It is obliged. It is obliged.’ ‘Umar said, ‘May my father and mother be your ransom, a funeral passed by and the deceased was spoken well of and you said, “It is obliged. It is obliged. It is obliged.”’ Then a funeral passed by and the deceased was spoken ill of and you said, “It is obliged. It is obliged. It is obliged.”’ The Messenger of Allah ﷺ said, ‘The Garden is obliged for the one you spoke well of and the Fire is obliged for the one you spoke ill of. You are the witnesses of Allah on the earth.</p>	<p>नरमी और हमदर्दी हो।”</p> <p>एक समूह ने कहा है कि इस आयत का मतलब यह है कि लोग मौत के बाद एक-दूसरे के खिलाफ गवाही देंगे। जैसा कि सहीह मुस्लिम में हज़रत अनसुँ से साबित है कि नबी ﷺ के पास से एक जनाज़ा गुज़रा और मय्यत की अच्छे अल्फ़ाज़ में तारीफ़ की गई तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वाजिब हो गई, वाजिब हो गई, वाजिब हो गई।” फिर एक और जनाज़ा गुज़रा और मय्यत के बारे में बुरे अल्फ़ाज़ कहे गए तो आप ﷺ ने फ़रमाया: “वाजिब हो गई, वाजिब हो गई।” हज़रत उमरुँ ने अर्ज़ किया: “मेरे माँ-बाप आप पर कुर्बान हों, एक जनाज़ा गुज़रा तो उसकी तारीफ़ की गई और आप ने फ़रमाया: ‘वाजिब हो गई, वाजिब हो गई, वाजिब हो गई’, फिर एक और जनाज़ा गुज़रा और उसकी बुराई की गई तो आप ने फ़रमाया: ‘वाजिब हो गई, वाजिब हो गई?’” तो रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “जिसकी तुम ने भलाई बयान की, उसके लिए जन्नत वाजिब हो गई, और जिसकी तुम ने बुराई बयान की, उसके लिए आग वाजिब हो गई। तुम ज़मीन पर अल्लाह के गवाह हो। तुम</p>
--	---

<p>You are the witnesses of Allah on the earth. You are the witnesses of Allah on the earth.’ Al-Bukhārī transmitted a similar report.</p>	<p>ज़मीन पर अल्लाह के गवाह हो। तुम ज़मीन पर अल्लाह के गवाह हो।” इमाम बुखारी ने भी इसी मफ़हूम की एक रिवायत नक़ल की है।</p>
<p>Abān and Layth related from Shahr ibn Hawshab that ‘Ubādah ibn aṣ-Ṣāmit said that he heard the Messenger of Allah ﷺ say, ‘My Community was given three things which no other Prophets were given. Whenever Allah sent a Prophet, He said to him, “Call on Me and I will answer you.” He said to this Community, “All of you call on Me and I will answer you.” When He sent a Prophet, He said to him, “I have not imposed any hardship on you in the dīn.” He said to this Community, “I have not imposed any hardship on any of you in the dīn.” When He sent a Prophet, He made him a witness against his people but He made this Community witnesses against the whole of mankind.’ Abū ‘Abdullāh at-Tirmidhī al-</p>	<p>अबान और लैथ ने शहर बिन हौशब से रिवायत की है कि हज़रत उबादह बिन सामित ने कहा: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फ़रमाते हुए सुना: “मेरी उम्मत को तीन ऐसी चीज़ें अता की गईं जो किसी और नबी को नहीं दी गईं। जब भी अल्लाह ने किसी नबी को भेजा तो उससे फ़रमाया: ‘मुझ से दुआ करो, मैं तुम्हारी दुआ क़बूल करूँगा।’ और इस उम्मत से फ़रमाया: ‘तुम सब मुझ से दुआ करो, मैं तुम सब की दुआ क़बूल करूँगा।’ जब अल्लाह ने किसी नबी को भेजा तो उससे फ़रमाया: ‘मैंने तुम पर दीन में कोई तंगी नहीं रखी।’ और इस उम्मत से फ़रमाया: ‘मैंने तुम में से किसी पर भी दीन में कोई तंगी नहीं रखी।’ और जब अल्लाह ने किसी नबी को भेजा तो उसे उसकी क़ौम पर गवाह बनाया, लेकिन इस उम्मत को तमाम इंसानों पर गवाह बनाया।” इस रिवायत को अबू अब्दुल्लाह तिर्मिज़ी अल-हाकिम ने नवादिरुल-</p>

<p>Hākīm transmitted it in Nawādir al-uṣūl.</p>	<p>उसूल में नक़ल किया है।</p>
<p>Our scholars say that, in His Book, our Lord has informed us of the preference He has given us by describing us as just and by entrusting us with the important task of bearing witness against all creation. He has given us the first place even if we are the last in time, as the Prophet ﷺ said, ‘We are the first who came last.’ This is also evidence that only the just may be witnesses, which will be discussed later.</p>	<p>हमारे उलमा कहते हैं कि हमारे रब ने अपनी किताब में हमें उस फ़ज़ीलत से आगाह किया है जो उसने हमें अता की है, इस तरह कि उसने हमें आदिल करार दिया और हमें तमाम मख़लूक के खिलाफ़ गवाही देने की अज़ीम ज़िम्मेदारी सौंपी। उसने हमें मरतबे में अक्वल रखा, अगरचे हम ज़माने के एतिबार से आख़िर में आए हैं, जैसा कि नबी ﷺ ने फ़रमाया: “हम आख़िर में आने वाले हैं मगर पहले हैं।” यह बात इस अम्र की भी दलील है कि गवाह सिर्फ़ आदिल ही हो सकता है, जिसका ज़िक्र आगे आएगा।</p>
<p>This āyah also contains evidence for the soundness of the consensus of the community and the obligation to judge by it because they have been considered just enough to testify against all mankind. Every generation is a witness for those who come after them. The position of the Companions is evidence and testimony for the Tābi‘īn and</p>	<p>यह आयत उम्मत के इज्मा‘ की सेहत और उसके मुताबिक़ फ़ैसला करने के वुजूब पर भी दलील रखती है, क्योंकि उम्मत को इतना आदिल करार दिया गया है कि वह तमाम इंसानों के खिलाफ़ गवाही दे सके। हर दौर के लोग अपने बाद आने वालों के लिए गवाह होते हैं। सहाबाँ का मक़ाम ताबिईन के लिए दलील और गवाही है, और ताबिईन का मक़ाम उनके बाद आने वालों के लिए। चूँकि</p>

<p>that of the Tabi‘in for those after them. Since the Community have been made witnesses, it is mandatory to accept what they say.</p>	<p>उम्मत को गवाह बनाया गया है, इसलिए उनकी बात को क़बूल करना लाज़िम है।</p>
<p>and the Messenger as a witness against you.</p>	<p>और रसूल तुम पर गवाह होंगे।</p>
<p>Meaning about your actions on the Day of Rising. It is also said that this can mean, ‘for you,’ bearing witness that you have faith.</p>	<p>यानी क्रियामत के दिन तुम्हारे आमाल के बारे में। यह भी कहा गया है कि इसका मतलब यह है कि रसूल तुम्हारे हक़ में गवाही देंगे, इस बात की कि तुम ईमान रखते हो।</p>
<p>We only appointed the direction you used to face in order to know those who follow the Messenger</p>	<p>हम ने वह क़िबला, जिसकी तरफ़ तुम पहले रुख़ करते थे, सिर्फ़ इस लिए मुकर्रर किया था कि हम जान लें कौन रसूल की पैरवी करता है।</p>
<p>What is meant here is the first qiblah since He says: ‘you used to face.’ It is also said that it was, in fact, the second qiblah. ‘Alī ibn Abī Ṭālib said that ‘know’ in this context means ‘see’. The Arabs used knowledge to mean seeing and seeing to mean knowledge. It is also said to mean ‘so that you know that we know.’ The hypocrites had doubts about</p>	<p>यहाँ जिस चीज़ का मतलब है वह पहला क़िबला है, क्योंकि फ़रमाया गया है: “जिस की तरफ़ तुम रुख़ किया करते थे”। यह भी कहा गया है कि दरहक़ीक़त वह दूसरा क़िबला था। हज़रत अली बिन अबी तालिब ने फ़रमाया कि इस मक़ाम पर “जानना” के मानी “देखना” हैं। अरब लोग कभी इल्म का लफ़्ज़ देखने के मानी में और देखने का लफ़्ज़ इल्म के मानी में इस्तेमाल करते हैं। यह भी</p>

Allah's knowledge of things before they took place. It is said that this distinguishes the people of certainty from the people of doubt, as Ibn Furak said. At-Ṭabarī mentioned the same view from Ibn 'Abbās. It is said that it means: 'so that the Prophet and his followers will know,' when Allah reports that about Himself, as when one says, 'The amīr did such-and-such' whereas it was his followers who did it. Al-Mahdawī mentioned it and it is excellent. It is said that it means: 'so that Muḥammad will know' but He ascribed the knowledge to Himself, exalted is He, to single out and show favour, just as He alluded to Himself ﷺ in His words, 'Son of Adam, I was sick but you didn't visit me...' The best view is that the meaning is that it is direct witnessing which makes recompense mandatory. Allah knows the unseen and the visible and He knows what will come about before it takes place. The circumstances of

कहा गया है कि इसका मतलब है: "ताकि तुम जान लो कि हम जानते हैं।" मुनाफ़िक़ीन को इस बात में शक था कि अल्लाह चीज़ों के वुकूअ से पहले उनका इल्म रखता है। यह भी कहा गया है कि इससे अहल-ए-यक़ीन और अहल-ए-शक में इम्तियाज़ मक़सूद है, जैसा कि इब्न फ़ुरक़ ने कहा। इमाम तबरी ने भी यही क़ौल हज़रत इब्न अब्बास से नक़ल किया है। यह भी कहा गया है कि इसका मतलब है: "ताकि नबी और उनके पैरोकार जान लें", और अल्लाह तआला ने इस फ़ेअल को अपनी तरफ़ मंसूब किया, जैसा कि अरबी उस्लूब में कहा जाता है: "अमीर ने फ़लाँ काम किया" हालाँकि वह काम उसके कारिंदों ने किया होता है। इमाम महदवी ने इस क़ौल का ज़िक़र किया है और यह निहायत उम्दा है। यह भी कहा गया है कि इसका मतलब है: "ताकि मुहम्मद ﷺ जान लें", मगर अल्लाह तआला ने इल्म को अपनी ज़ात की तरफ़ मंसूब फ़रमाया ताकि इख़्तिसास और तकरीम ज़ाहिर हो, जैसा कि उसने अपने नबी ﷺ की तरफ़ इशारा अपने इस फ़रमान में किया: "ऐ इब्न-ए-आदम! मैं बीमार था मगर तू ने मेरी

<p>known things vary but His knowledge does not vary. His knowledge is the same in every instance. <i>Follow the Messenger</i> here means in respect of the command to change the qiblah to the Ka'bah.</p>	<p>अयादत न की...” सब से बेहतर क़ौल यह है कि यहाँ मुराद वह बराह-ए-रास्त मुशाहदा है जिस की बुनियाद पर जज़ा व सज़ा लाज़िम हो जाती है। अल्लाह ग़ैब और ज़ाहिर दोनों को जानता है, और किसी चीज़ के वुकूअ से पहले भी उसे जानता है। मालूम चीज़ों के अहवाल बदलते रहते हैं, मगर अल्लाह का इल्म नहीं बदलता; उसका इल्म हर हाल में यकसाँ रहता है। और यहाँ रसूल की पैरवी से मुराद क़िबला को बैतुल्लाह (काबा) की तरफ़ बदलने के हुक्म में रसूल ﷺ की इताअत है।</p>
<p>from those who turn round on their heels</p>	<p>उन लोगों से जो उलटे पाँव फिर जाते हैं।</p>
<p>This is referring to those who apostatised from the dīn, because when the qiblah was changed some of the Muslims reverted to their former belief and some became hypocrites.</p>	<p>इस से मुराद वह लोग हैं जो दीन से फिर गए, क्योंकि जब क़िबला तबदील किया गया तो बाज़ मुसलमान अपने पिछले अकीदे की तरफ़ लौट गए और बाज़ मुनाफ़िक़ हो गए।</p>
<p>Though in truth it is a very hard thing –</p>	<p>और हक़ीक़त में यह एक बहुत सख़्त बात थी —</p>
<p>This means the change of qiblah as Ibn ‘Abbās, Mujāhid and Qatādah said. <i>Except for those Allah has guided: He</i></p>	<p>इस से मुराद क़िबला की तबदीली है, जैसा कि इब्न अब्बास, मुजाहिद और क़तादा ने कहा है। सिवाए उन</p>

<p>created the guidance which is faith in their hearts as He says: <i>'Allah has inscribed faith upon such people's hearts.'</i></p>	<p>लोगों के जिन्हें अल्लाह ने हिदायत दी: यानी अल्लाह ने उनके दिलों में हिदायत पैदा की, जो ईमान है, जैसा कि उसका फ़रमान है: “अल्लाह ने ऐसे लोगों के दिलों पर ईमान लिख दिया है।”</p>
<p>Allah would never let your faith go to waste.</p>	<p>अल्लाह तुम्हारे ईमान को हरगिज़ ज़ाया नहीं करेगा।</p>
<p>Scholars agree that this was revealed about those who died having prayed toward Jerusalem as we see in al-Bukhārī from al-Barā' ibn 'Āzib. In at-Tirmidhī, Ibn 'Abbās said, 'When the Prophet ﷺ turned towards the Ka'bah, they asked "Messenger of Allah, what about our brothers who died while they were praying towards Jerusalem?" and Allah revealed this.' The prayer is called 'faith' here because it contains intention, word and action. Mālik said, 'I mention this āyah to refute the position of the Murji'ites that the prayer is not part of faith.' Muḥammad ibn Ishāq said that it means</p>	<p>उलमा का इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि यह आयत उन लोगों के बारे में नाज़िल हुई जो बैतुल-मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हुए वफ़ात पा गए थे, जैसा कि हमें हज़रत बराअ बिन आज़िबु से सहीह बुखारी में मिलता है। जामे' तिरमिज़ी में हज़रत इब्र अब्बासु से रिवायत है कि उन्होंने कहा: “जब नबी ﷺ ने काबा की तरफ़ रुख किया तो लोगों ने पूछा: ‘या रसूलुल्लाह! हमारे उन भाइयों का क्या होगा जो बैतुल-मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ते हुए फ़ौत हो गए?’ तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई।” यहाँ नमाज़ को ईमान कहा गया है, क्योंकि इसमें नियत, क़ौल और अमल तीनों शामिल हैं। इमाम मालिकु ने फ़रमाया: “मैं इस आयत को मुरजिआ के उस क़ौल के रद्द में पेश करता हूँ कि नमाज़</p>

<p>your turning to the qiblah and your affirming your Prophet ﷺ. This is the position of most Muslims and those who deal with fundamentals. Ibn Wahb, Ibn al-Qāsim, Ibn ‘Abd al-Ḥakam and Ashhab related from Mālik that it means ‘your prayer’.</p>	<p>ईमान का हिस्सा नहीं है।” मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने कहा कि इससे मुराद तुम्हारा क़िबला की तरफ़ रुख़ करना और अपने नबी ﷺ की तस्दीक़ करना है। यही अकसर मुसलमानों और उसूल-ए-दीन से ताल्लुक़ रखने वालों का मौक़िफ़ है। इब्न वहब, इब्न अल-क़ासिम, इब्न अब्दुल-हक़म और अशहब ने इमाम मालिक से रिवायत किया है कि इससे मुराद तुम्हारी नमाज़ है।</p>
<p>Allah is All-Gentle, Most Merciful to mankind.</p>	<p>अल्लाह लोगों पर निहायत मेहरबान, बहुत रहम फ़रमाने वाला है।</p>
<p>‘Ra’fah’ (gentleness) is stronger than ‘rahmah’ (mercy). Abū ‘Amr ibn al-‘Alā’ said that gentleness is more frequent than mercy. The meanings are similar.</p>	<p>‘रअफ़त’ (नर्मी व शफ़क़त) ‘रहमत’ (मेहरबानी) से ज़्यादा क़वी है। अबू अम्र बिन अल-अला ने कहा है कि रअफ़त रहमत से ज़्यादा आम और कसरत से पाई जाती है। दोनों के मआनी बाहम क़रीब और मिलते-जुलते हैं।</p>
<p>We have seen you looking up into heaven, turning this way and that, so We will turn you towards a direction which will please you. Turn your face, therefore, towards Masjid al-Ḥarām. Wherever</p>	<p>हम ने तुम्हें आसमान की तरफ़ बार-बार नज़रें उठाते हुए देखा है, इसलिए हम तुम्हें उसी क़िबले की तरफ़ फेर देंगे जो तुम्हें पसंद है। पस अपना रुख़ मस्जिदुल-हराम की तरफ़ कर लो, और तुम जहाँ</p>

<p>you all are, turn your faces towards it. Those given the Book know it is the truth from their Lord. Allah is not unaware of what they do. [2:144]</p>	<p>कहीं भी हो, अपने चेहरे उसी की तरफ़ फेर लो। जिन लोगों को किताब दी गई है, वे ख़ूब जानते हैं कि यह उनके रब की तरफ़ से हक़ है। और अल्लाह उनके आमाल से बे-ख़बर नहीं है। [2:144]</p>
<p>We have seen you looking up into heaven,</p>	<p>हम ने तुम्हें आसमान की तरफ़ नज़र उठाते हुए देखा है,</p>
<p>This āyah was revealed before 2:282. At-Ṭabarī said that he ﷺ was turning his eyes towards the heaven. Az-Zajjāj said that it is to move the eyes about in the direction of the sky. The meanings are similar. ‘Heaven’ is mentioned because it was the main direction he looked towards and is the source of things like rain, mercy and revelation. ‘Please you’ means that you will love it. As-Suddī said, ‘When he prayed towards Jerusalem, he would raise his head towards heaven, waiting to see what he would be commanded to do. He wanted to pray towards the Ka‘bah and Allah revealed: “We have seen</p>	<p>यह आयत, आयत 2:282 से पहले नाज़िल हुई थी। इमाम तबरी ने कहा है कि नबी ﷺ अपनी निगाहें आसमान की तरफ़ उठाया करते थे। अज़-ज़ज्जाज ने कहा कि इससे मुराद आँखों का आसमान की सिम्त हरकत करना है। दोनों मआनी बाहम करीब हैं। यहाँ आसमान का ज़िक्र इस लिए किया गया है कि वही आप ﷺ की निगाह का असल रुख़ था और वही बारिश, रहमत और वह्य जैसी चीज़ों का मंबा है। “जो तुम्हें पसंद है” का मतलब यह है कि तुम उसे पसंद करोगे और उससे मुहब्बत रखोगे। सुदी ने कहा: “जब नबी ﷺ बैतुल-मक़दिस की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे तो आसमान की तरफ़ सर उठाते थे, इस इंतज़ार में कि क्या हुक्म दिया जाएगा। आप ﷺ काबा की तरफ़</p>

<p>you looking up into heaven.”</p>	<p>नमाज़ पढ़ना चाहते थे, तो अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई: ‘हम ने तुम्हें आसमान की तरफ़ नज़र उठाते हुए देखा है।’”</p>
<p>Turn your face, therefore, towards the Masjid al-Ḥarām.</p>	<p>पस अपना रुख़ मस्जिदुल-हराम की तरफ़ कर लो।</p>
<p>It is said to be towards any part of the House as Ibn ‘Abbās said while it is ‘Umar said toward the Mīzāb of the Ka‘bah as Ibn ‘Atīyyah related. The Mīzāb is the qiblah of Madīnah and the people of Syria and Andalusia. Ibn Jurayj related from ‘Aṭā’ that Ibn ‘Abbās reported that the Messenger of Allah ﷺ said, ‘The House is the qiblah for the people who can see it and the mosque is the qiblah for the people of Makkah, and Makkah is the qiblah for the rest of the people of my community, wherever they are on the earth, east or west.’ The word ‘towards’ (shatr) here means ‘in the direction of’, although the word can mean</p>	<p>कहा गया है कि इससे मुराद बैतुल्लाह के किसी भी हिस्से की तरफ़ रुख़ करना है, जैसा कि इब्न अब्बास ने फ़रमाया। जबकि हज़रत उमर ने कहा कि काबा के मीज़ाब की तरफ़ रुख़ किया जाए, जैसा कि इब्न अतिय्यह ने नक़ल किया है। मीज़ाब अहल-ए-मदीना, अहल-ए-शाम और अहल-ए-अंदलुस का क़िबला है। इब्न जुरैज ने अता से रिवायत किया है कि इब्न अब्बास ने बयान किया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया: “बैतुल्लाह उन लोगों का क़िबला है जो उसे देख सकते हैं, मस्जिद अहल-ए-मक्का का क़िबला है, और मक्का मेरी उम्मत के बाक़ी तमाम लोगों का क़िबला है, वह जहाँ भी हों, ज़मीन के मशरिक् में हों या मगरिब में।” यहाँ लफ़ज़ “तरफ़” (शतर) का मतलब “सिम्त” है, अगरचे यह लफ़ज़ “आधा” के मआनी में भी आता है।</p>



<p>‘half’.</p>	
<p>There is no disagreement among scholars that the Ka‘bah itself is the actual qiblah of everyone. They agree that it is mandatory for it to be faced by someone who can actually see it, and if he does not do that, then his prayer is invalid and he must repeat it. They agree that all of those who cannot see it face in its direction. If it is hidden from a person, then he must look for evidence for it from the stars, the direction of the wind, location of mountains and the like which will enable him to deduce the direction. If someone is sitting in the Masjid al-Harām, he should face the Ka‘bah and look at it with faith and in expectation of the reward. Looking at the Ka‘bah is an act of worship as ‘Atā’ and Mujāhid said.</p>	<p>उलमा के दरमियान इस बात में कोई इख्तिलाफ़ नहीं है कि खुद काबा ही सब लोगों का हक़ीक़ी क़िबला है। वे इस पर मुत्तफ़िक्क़ हैं कि जो शख्स काबा को अपनी आँखों से देख सकता हो, उसके लिए लाज़िमी है कि वह ऐन उसी की तरफ़ रुख़ करे, और अगर वह ऐसा न करे तो उसकी नमाज़ सहीह नहीं होगी और उसे नमाज़ दोबारा पढ़नी होगी। वे इस पर भी मुत्तफ़िक्क़ हैं कि जो लोग काबा को देख नहीं सकते, वे उसकी सिम्त की तरफ़ रुख़ करेंगे। अगर किसी शख्स से काबा ओझल हो तो उस पर लाज़िम है कि वह सितारों, हवा की सिम्त, पहाड़ों के महल-ए-वुकू‘ और इसी तरह की दूसरी अलामात से क़िबला की सिम्त मालूम करे, ताकि वह दुरुस्त रुख़ मुतय्यन कर सके। और अगर कोई शख्स मस्जिद-ए-हराम में बैठा हो तो उसे चाहिए कि ईमान के साथ और सवाब की उम्मीद रखते हुए काबा की तरफ़ रुख़ करे और उसे देखे। काबा को देखना ब-ज़ात-ए-ख़ुद इबादत है, जैसा कि अता० और मुजाहिद० ने कहा है।</p>
<p>There is disagreement about</p>	<p>इस मसले में इख्तिलाफ़ है कि जो</p>



<p>whether someone not at the Ka'bah must face it exactly or just face in the direction of it. Facing in the direction of it is sound for three reasons. We are only responsible for doing what is possible for us since Allah says: <i>'Wherever you are, turn your faces towards it.'</i> That is what we are commanded to do in the Qur'an by this āyah. The third reason is that scholars use the long line in the prayer as evidence, since clearly if the line is longer than the side of the kabah not everyone can be facing it directly.</p>	<p>शऱख काबा के पास मौजूद न हो, क्या उस पर ऐन काबा ही की तरफ़ रुख़ करना लाज़िम है या सिर्फ़ उसकी सिम्त की तरफ़। काबा की सिम्त की तरफ़ रुख़ करना तीन वुजूह से दुरुस्त है। अव्वल यह कि हम पर सिर्फ़ उतनी ही ज़िम्मेदारी है जितनी हमारे लिए मुमकिन हो, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: “तुम जहाँ कहीं भी हो, अपने चेहरे उसी की तरफ़ फेर लो।” दोम यह कि इसी आयत के ज़रिये कुरआन में हमें यही हुक्म दिया गया है। सोम यह कि उलमा नमाज़ में सफ़-ए-तवील को दलील बनाते हैं, क्योंकि ज़ाहिर है कि अगर सफ़ काबा के एक पहलू से भी ज़्यादा लम्बी हो तो सब लोग एक साथ ऐन काबा की तरफ़ रुख़ नहीं कर सकते।</p>
<p>The ayah also contains clear evidence in support of what Mālik and those who agree with him hold, which is the ruling that someone praying should look straight ahead and not at the place where he is going to prostrate. Ath-Thawri, Abū Hanifah, ash-Shafi'i and al-Hasan ibn Hayy said that it is recommended for him to</p>	<p>यह आयत उस मौक़िफ़ की भी वाज़ेह दलील रखती है जिसके काइल इमाम मालिक० और उनके मुवाफ़िक़ीन हैं, यानी यह हुक्म कि नमाज़ पढ़ने वाला सीधा सामने की तरफ़ नज़र रखे और सज्दा की जगह की तरफ़ न देखे। सुफ़यान सौरी०, अबू हनीफ़ा०, इमाम शाफ़िई० और हसन बिन हय्य० ने कहा है कि नमाज़ी के लिए मुस्तहब है कि वह सज्दा की जगह की तरफ़</p>

<p>look at the place where he is going to prostrate. Qadi Sharik said, 'While standing, he looks at the place where he is going to prostrate, in bowing he looks at his feet, in prostration he looks at the place of his nose, and in sitting, he looks at his lap.</p>	<p>देखे। क़ाज़ी शरीक़ ने कहा: “क्रियाम की हालत में वह सज्दा की जगह की तरफ़ देखे, रुकू में अपने पाँवों की तरफ़, सज्दे में अपनी नाक की जगह की तरफ़, और बैठने की हालत में अपनी गोद की तरफ़ नज़र रखे।”</p>
<p>Those given the Book know it is the truth from their Lord.</p>	<p>जिन लोगों को किताब दी गई है, वे जानते हैं कि यह उनके रब की तरफ़ से हक़ है।</p>
<p>This means that the Jews and Christians know that the change of direction has come from Allah. If it is asked, 'How can they know this when it is not part of their din or in their Book?' there are two answers. One is that since they know from their Book that Muhammad is a Prophet, they know that it follows that he only speaks the truth and only commands it. The second is that they know from their din that abrogation is permitted, even if some deny it, and so they know that abrogation is permitted in respect of the</p>	<p>इसका मतलब यह है कि यहूदी और ईसाई जानते हैं कि क़िब्ले की तब्दीली अल्लाह की तरफ़ से हुई है। अगर यह सवाल किया जाए कि वे यह कैसे जानते हैं जबकि यह न तो उनके दीन का हिस्सा है और न ही उनकी किताब में है? तो इसके दो जवाब हैं। अल्ल यह कि वे अपनी किताब के ज़रिये यह जानते हैं कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के नबी हैं, और जब यह बात साबित हो गई तो लाज़िमन यह भी साबित हो जाता है कि आप ﷺ सिर्फ़ हक़ ही बयान करते हैं और उसी का हुक्म देते हैं। दोम यह कि वे अपने दीन में यह उसूल जानते हैं कि नसख़ (हुक्म का मंसूख़ होना) जायज़ है,</p>

<p>qiblah.</p>	<p>अगरचे कुछ लोग इसका इंकार करते हैं, लिहाज़ा वे यह भी जानते हैं कि क़िब्ले के मामले में नस्ख जायज़ हो सकता है।</p>
<p>Allah is not unaware of what they do.</p>	<p>अल्लाह उनके आमाल से बे-ख़बर नहीं है।</p>
<p>Ibn 'Amir, Hamzah and al-Kisāī recited it with ta', 'what you do', addressed to the community of Muhammad. Both readings inform us that Allah is not unaware of what His slaves do. It contains a threat. The other reading is with y 'what they do'.</p>	<p>इब्र आमिर, हमज़ा और किसाई ने इसे ता के साथ पढ़ा है: “जो तुम करते हो”, यानी ख़िताब उम्मत-ए-मुहम्मद ﷺ से है। दोनों क़िराअतें इस बात की ख़बर देती हैं कि अल्लाह अपने बन्दों के आमाल से बे-ख़बर नहीं है। इसमें एक तन्बीह और वर्इद भी शामिल है। दूसरी क़िराअत या के साथ है: “जो वे करते हैं”।</p>
<p>If you were to bring every Sign to those given the Book, they still would not follow your direction. You do not follow their direction. They do not follow each other's direction. If you followed their whims and desires, after the knowledge that has come to you, you would then be one of the wrongdoers. [2:145]</p>	<p>अगर तुम अहल-ए-किताब के पास हर तरह की निशानियाँ भी ले आओ, तब भी वे तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी नहीं करेंगे। और तुम उनके क़िब्ले की पैरवी करने वाले नहीं हो, और न वे एक-दूसरे के क़िब्ले की पैरवी करते हैं। और अगर उस इल्म के आ जाने के बाद जो तुम्हारे पास आया है, तुम उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी करो, तो तुम ज़रूर ज़ालिमों में से हो जाओगे। [2:145]</p>



<p>If you were to bring every Sign to those given the Book, they still would not follow your direction.</p>	<p>अगर तुम अहल-ए-किताब के पास हर तरह की निशानियाँ भी ले आओ, तब भी वे तुम्हारे क़िब्ले की पैरवी नहीं करेंगे।</p>
<p>This is because they disbelieve even when the truth is clear to them and signs do not help them.</p>	<p>यह इस लिए है कि वे हक़ वाज़ेह हो जाने के बावजूद भी इंकार करते हैं, और निशानियाँ भी उनके लिए फ़ायदेमंद नहीं होतीं।</p>
<p>You do not follow their direction. They do not follow each other's direction.</p>	<p>तुम उनके क़िब्ले की पैरवी नहीं करते, और न वे एक-दूसरे के क़िब्ले की पैरवी करते हैं।</p>
<p>You do not incline to anything they face. Then Allah tells us that the Jews do not follow the qiblah of the Christians nor the Christians that of the Jews. As-Suddi and Ibn Zayd said that this tells us about their disunity and misguidance Some people say that it means that those of them who have become Muslim and follow you do not follow the qiblah of those who are not Muslim nor do those who are not Muslim follow the qiblah of those who are. The first view is more likely, and Allah knows best.</p>	<p>इसका मतलब यह है कि तुम उस चीज़ की तरफ़ बिल्कुल माइल नहीं होते जिसकी तरफ़ वे रुख़ करते हैं। फिर अल्लाह हमें बताता है कि यहूदी ईसाइयों के क़िब्ले की पैरवी नहीं करते और न ही ईसाई यहूदियों के क़िब्ले की पैरवी करते हैं। सुदी और इब्न ज़ैद ने कहा है कि इसमें उनकी आपसी तफ़रक़ाबाज़ी और गुमराही का बयान है। कुछ लोगों ने कहा है कि इसका मतलब यह है कि उनमें से जो लोग मुसलमान हो चुके हैं और तुम्हारी पैरवी करते हैं, वे ग़ैर-मुस्लिमों के क़िब्ले की पैरवी नहीं करते, और न ही ग़ैर-मुस्लिम उनके क़िब्ले की पैरवी करते हैं। पहला क़ौल ज़्यादा दुरुस्त</p>



	मालूम होता है, और अल्लाह ही बेहतर जानता है।
If you followed their whims and desires,	अगर तुम उनकी ख्वाहिशात और ख्वाहिश-ए-नफ़्स की पैरवी करो,
This is addressed to the Prophet but it is his Community that is meant because it is not permitted for the Prophet to do anything that would entail wrongdoing. It is possible that it means those who disobey the Prophet. The Prophet is addressed to give the command more emphasis.	यह ख़िताब बज़ाहिर नबी ﷺ से है, लेकिन इससे मुराद आपकी उम्मत है, क्योंकि नबी ﷺ के लिए ऐसा कोई काम करना जायज़ नहीं जो जुल्म का बाइस बने। यह भी मुमकिन है कि इससे मुराद वे लोग हों जो नबी ﷺ की नाफ़रमानी करें। नबी ﷺ को ख़िताब इस लिए किया गया है ताकि हुक्म में मज़ीद तअकीद और ज़ोर पैदा हो जाए।
Those We have given the Book recognise it as they recognise their own sons. Yet a group of them knowingly conceal the truth. [2:146]	जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसे ऐसे पहचानते हैं जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं, मगर उनमें से एक समूह जान-बूझ कर हक़ को छुपाता है। [2:146]
Those We have given the Book recognise it	जिन लोगों को हमने किताब दी है, वे उसे पहचानते हैं।
The third person pronoun 'it' referring back to the Book can also be read as 'him' referring to the Prophet, in which case it means they recognise his Prophethood and affirm his	तीसरा शख़्सी ज़मीर “उसे” जो किताब की तरफ़ लौटता है, उसे “उसे / उसे (उसे)” यानी नबी ﷺ की तरफ़ भी पढ़ा जा सकता है। इस सूरत में इसका मतलब यह होगा कि वे आप ﷺ की नुबुव्वत को पहचानते हैं

<p>Message, as Mujahid, Qatādah, as others said. It is also said that what they recognise is that the change of the qiblah from Jerusalem to the Ka'bah is true, as Ibn 'Abbās, Ibn Jurayj, ar-Rabī and Qatādah said.</p>	<p>और आपके पैग़ाम की तस्दीक़ करते हैं, जैसा कि मुजाहिद॑, क़तादा॑ और दूसरे हज़रात ने कहा है। यह भी कहा गया है कि जिस चीज़ को वे पहचानते हैं, वह बैतुल-मक़दिस से काबा की तरफ़ क़िब्ले की तब्दीली का हक़ होना है, जैसा कि इब्र अब्बास॑, इब्र जुरैज॑, रबी॑ और क़तादा॑ ने कहा है।</p>
<p>as they recognise their own sons.</p>	<p>जैसे वे अपने बेटों को पहचानते हैं।</p>
<p>'Sons' are mentioned after them 'their own selves' because time may pass for someone in which he does not recognise himself, but he will still recognise his son. It is related that 'Umar asked 'Abdullah ibn Sallam, 'Did you recognize Muhammad as you recognise your son?' He answered, "Yes, and more! Allah sent His trusted one in His heaven to His trusted one on earth with his description and I recognised him. I have doubts about my son."</p>	<p>“बेटों” का ज़िक्र “उनकी अपनी जानों” के बाद इस लिए किया गया है कि कभी ऐसा वक़्त आ जाता है कि इंसान खुद को तो न पहचान सके, लेकिन अपने बेटे को फिर भी पहचान लेता है। रिवायत है कि हज़रत उमर॑ ने अब्दुल्लाह बिन सलाम॑ से पूछा: “क्या तुम मुहम्मद ﷺ को उसी तरह पहचानते हो जैसे अपने बेटे को पहचानते हो?” उन्होंने जवाब दिया: “हाँ, बल्कि इससे भी ज़्यादा! अल्लाह ने आसमान में अपने अमीन को ज़मीन में अपने अमीन की तरफ़ उसकी सिफ़ात के साथ भेजा, और मैंने उन्हें पहचान लिया। अलबत्ता मुझे अपने बेटे के बारे में शक़ हो सकता है।”</p>

<p>Yet a group of them knowingly conceal the truth.</p>	<p>मगर उनमें से एक समूह जान-बूझ कर हक़ को छुपाता है।</p>
<p>The 'truth' they conceal may be their recognition of Muhammad or the change of the qiblah and is the result of their obstinacy.</p>	<p>वह हक़ जिसे वे छुपाते हैं, या तो मुहम्मद ﷺ की नुबुव्वत की पहचान है या क़िब्ले की तब्दीली का हक़ होना, और यह उनकी हठधर्मी और ज़िद का नतीजा है।</p>
<p>The truth is from your Lord, so on no account be among the doubters. [2:147]</p>	<p>हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है, लिहाज़ा तुम हरगिज़ शक करने वालों में से न होना। [2:147]</p>
<p>The truth is from your Lord,</p>	<p>हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है।</p>
<p>This refers to the change of qiblah not what the Jews say about their qiblah. According to Ali, this is connected to 'they know' in the previous ayah and so it means, "They know the truth from your Lord. Or it implies: 'Hold to the truth.</p>	<p>इससे मुराद क़िब्ले की तब्दीली है, न कि वह बात जो यहूदी अपने क़िब्ले के बारे में कहते हैं। हज़रत अली के मुताबिक़ यह पिछली आयत के अल्फ़ाज़ "वे जानते हैं" से मरबूत है, और इसका मतलब यह बनता है कि: "वे तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ को जानते हैं।" या इसमें यह मफ़हूम भी पाया जाता है: "हक़ को मज़बूती से थामे रखो।"</p>
<p>so on no account be among the doubters.</p>	<p>लिहाज़ा तुम हरगिज़ शक करने वालों में से न होना।</p>
<p>Again, although the Prophet is addressed, it is his Community</p>	<p>यहाँ भी अगरचे ख़िताब नबी ﷺ से है, लेकिन इससे मुराद आपकी उम्मत</p>



that is meant.	है।
----------------	-----

